P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

संगीत और चित्रकला का संबंध

रेखा धीमान
सह–प्राध्यापक,
चित्रकला विभाग,
शा. हमीदिया कला एवं
वाणिज्य महाविद्यालय,
भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

चित्र और संगीत ललित कला की दो मुख्य धारायें हैं, जिनका संबंध ज्ञानेंद्रियों से है जिसके माध्यम से मानव अभिभूत हो सौंदर्य रस का आस्वादन करता है। जिस तरह चित्र में रंग उसकी आत्मा है उसी प्रकार संगीत की आत्मा स्वर है। संगीत की सृष्टि नाद से होती है। संगीत कला प्रारंभ में शिवजी के पास थी, उनसे ब्रम्हा जी ने ग्रहण की और ब्रम्हा जी से देवी सरस्वती ने। नारद जी ने इसे संसार में प्रसारित किया। संगीत में राग–रागिनी का उल्लेख प्रमुखता से लिया जाता है, इससे ही रागमाला बनी, जो कि ऋतु, समय और मानवीय दशाओं पर आधारित थी। रागमाला की संवेदनशीलता ने चित्रकारों को अपनी ओर आकर्षित किया। चावंड (मेवाड़), मारवाड़, जयपुर, अम्बर, ग्वालियर और अन्य पहाड़ी क्षेत्रों में रागमाला का चित्रण प्रमुखता से हुआ। रागात्मक सौंदर्य को चित्रों मे परिणित करने का कार्य चित्रकार निसारदी, साहबदीन नागपुरवाला तथा अन्य अनेकों कलाकारों ने किया। इस प्रकार सांगीतिक धारा को चित्रकारों ने अधिक प्रभावशाली और स्थायित्व प्रदान करने का प्रयास किया।

मुख्य शब्द : नाद, रागमाला, रागरागिनी।

प्रस्तावना

संगीत वह जादू है जिसमें श्रोताओं को मंत्र मुग्ध करने की असीम क्षमता होती है। ललित कलाओं में संगीत कला श्रेष्ठ मानी जाती है। परमात्मा ने मानव शरीर की रचना कुछ इस प्रकार से की है कि जिह्वा, नेत्र, नासिका तथा श्रवणेन्द्रियाँ आदि प्रकृति प्रदत्त यंत्र रहस्यपूर्ण विधि से संचालित होते रहते हैं और सभी अपना–अपना कार्य सुचारू रूप से करते हैं। शारीरिक अंगों में सबसे महत्वपूर्ण अंग मस्तिष्क है जिसके संकेत मात्र से समस्त ज्ञानेंद्रियाँ संचालित होती रहती हैं। कला रसिक के मन को आनन्दित करती हैं। यह एक मानसिक प्रक्रिया है। ललित कलाओं में चित्र और संगीत दोनों ही महत्वपूर्ण कलायें हैं, जिनका संबंध 'भाव' अर्थात 'रसों' से है। इस कारण इन कलाओं में भाव पक्ष प्रबल होता है। संगीत और चित्र दोनों में मौलिक साम्यता दृष्टिगत होती है, वह है 'रस' जो कि किसी सहृदय के हृदय में वास करता है। जिस तरह चित्र में 'रंग' उसी प्रकार संगीत में 'स्वर' उसकी आत्मा है। चित्रकला और संगीत दोनों का उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति होता है जिससे परमानंद की प्राप्ति होती है।

'संगीत की सृष्टि ''नाद'' से होती है और स्वर इसका प्राण है जिस प्रकार रंग से चित्र, प्रस्तर से मूर्ति तैयार होते हैं, उसी प्रकार नाद से संगीत प्रस्फुटित होता है।'[1]

संगीत ईश्वरीय वाणी है अतः यह ब्रह्म रूप है। सारा संसार ही नादमय है। नाद से वर्ण, वर्ण से शब्द और शब्द से वाक्य और वाक्य से भाषा की उत्पत्ति होती है जिससे सृष्टि का व्यवहार चलता है।

नादेन व्यंज्यते वर्णः पदं वर्णात यदा उवः।
वचसो व्यवहारोऽयं नादाधीन मतो जगत।।[2]

नाद की उत्पत्ति ध्वनि के टकराव के फलस्वरूप होती है। वातावरण में वायु में कम्पन होता है, जो हमारी कर्णेन्द्रियों को स्पन्दित करता है और इस प्रकार हमारी चेतना को ध्वनि का आभास होता है। अतः कहा जा सकता है कि सुव्यवस्थित ध्वनि जो रस की सृष्टि करे वह संगीत कहलाती है। ध्वनि का आदि स्रोत प्रकृति में उपलब्ध ध्वनियाँ हैं, जिन्हें सुनकर मन आनंदित और उल्लासित होता है जैसे बयार का चलना बहता हुआ निर्झर, कलकल करती नदियाँ, कोयल की कुहुक, चिड़ियों का चहचहाना आदि आदि।

मार्क अर्नेस्ट ने अपनी पुस्तक 'स्पिरिट ऑफ म्यूजिक' में लिखा है संगीत केवल सामान्य ध्वनि नहीं अपितु यह सूक्ष्म अंर्तवृत्तियों के उद्घाटन का सबल साधन है।

कार्ल स्टम्फ ने भाषा की उत्पत्ति के बाद मनुष्य द्वारा ध्वनि की एकतारता को स्वर की उत्पत्ति माना है। भारतेन्द्र हरिश्चंद्र के अनुसार ''संगीत की उत्पत्ति मानवीय संवेदना के साथ हुई।''

संगीत शब्द 'सम + ग्र' धातु के मेल से बना है। अन्य भाषाओं में सं का 'सिं' हो गया और गै या 'गा' धातु जिसका अर्थ होता है गाना। वैदिक युग में वेदों की रचना हुई। सबसे पुराने वेद ऋग्वेद में संगीत अमोद–प्रमोद का साधन, यजुर्वेद में आजीविका का साधन और सामवेद को संगीत का मूल ग्रंथ माना गया है। सामवेद में उच्चारण की दृष्टि से तीन और संगीत की दृष्टि से सात स्वरों का उल्लेख मिलता है।'[3]

ऐसा माना गया है कि संगीत कला शिवजी के पास थी, शिवजी से ब्रह्माजी ने ग्रहण की और ब्रह्माजी से कला की देवी सरस्वती ने इस संगीत को नारद जी ने प्रचारित किया। संगीत में सात स्वरों का विशेष महत्व है। 'अग्नि, ब्रह्मा, चंद्रमा, विष्णु, नारद, तुम्बरू और धनक (कुबेर) क्रमशः सात स्वरों के ऋषि हैं। महादेव जी के 5 मुखों से 5 राग तथा छटा राग पार्वती के मुख से निकला। महादेव जी ने जब नर्तन शुरू किया तब सद्योवक्त्र नामक मुख से श्री राग निकला, वामदेव मुख से वसंत राग निकला, अधोर मुख से भैरव, तत्पुरूष मुख से पंचम और इशान मुख से मेघराग निकला तथा पार्वती के मुख से नट नारायण राग उत्पन्न हुए।[4]

आचार्य भरत ने 6 राग तथा 30 रागिनियाँ मानी है। इनको गाने की विशेष ऋतुयें, समय तथा प्रहर भी है जब इन्हें गाया जाता है। 'रागिनी शब्द का प्रयोग सबसे पहले राग पत्नि के रूप में 'पंचम् सार संहिता' ग्रंथ (7वी से 11वी सदी) में नारद ने किया था। बाद में पुरूष या प्रधान राग की पटरानी के रूप में मान्यता मिली।[5] इन राग–रागियों से ही 'रागमाला' बनी। राग–माला में पुत्र तथा पुत्रवधुओं का भी वर्णन मिलता है। ऋतुओं और प्रदेश के आधार पर इनके नाम रखे गये। धीरे–धीरे स्वरों के मेल से उनका स्वभाव भी निश्चित हुआ।

राग–रागिनियों के चित्रण का समय निर्धारित नहीं है अनुमानतः 13वी सदी में राजस्थान के मेवाड़ में राग रागिनियों का उल्लेख मिलता है। इसके अलावा आइने अकबरी में भी वर्णन मिलता है। 16वी सदी में राजस्थान में रागमाला का चित्रण होने लगा था। इसे मूर्त रूप देने के लिये संगीतज्ञ और कवियों ने संस्कृत के श्लोक बनाये, जिसके आधार पर चित्र निर्मित किये गये। इनकी कल्पना नायक–नायिका के रूप में की गई। राजस्थान में चावंड (मेवाड़) प्रमुख केन्द्र के रूप में उभर कर आया। इसके अलावा उत्तर भारत, मारवाड़, जयपुर, अम्बर तथा पहाड़ी क्षेत्रों में संगीतिक चित्र रचना हुई। मध्यप्रदेश ग्वालियर में सिंधिया स्थापत्य रागमाला का चित्रण देखने को मिलता है।

एक रागमाला का संयोजन समान रूप से कला के अनुकूल नियमों में होता है। इस प्रकार 36 या 42 चित्रों की रागमाला बनने लगी। 17वी सदी में भैरव, मालकौस, हिंडोल, दीपक, श्री तथा मेघराग मुख्य राग थे। चित्रकार प्रणाली अनुसार 36 राग–रागिनी इस प्रकार थेः–

1. भैरव, 2, भैरवी, 3. नट, 4. मालश्री, 5. पट मंजरी, 6. ललित, 7. मालकोस, 8. गौरी, 9. खम्बावती, 10. मालवी, 11. हिंडोल, 12. गुनकली, 13. रामकली, 14. बिलावल, 15. टांडी, 16. देसाख, 17. देवगांधार, 18. मधु माधवी, 19. दीपक, 20. धनश्री, 21. बसंत, 22. कवड़, 23. वैराडी, 24. देसराती या पूर्वी, 25. मेघ, 26. गूजरी, 27. गोंडमल्लार, 28. कुकुभ, 29. विभास, 30. बंगाल, 31. श्री, 32. पंचम, 33. कामोद या कामोदनी, 34. सतमल्लार, 35. असावरी और 36. केदार'[6]

उपरोक्त रागमालाओं का चित्रण अलग–अलग केन्द्रों पर विभिन्न कलाकारों ने किया। जिनमें निसारदी, साहबदीन, नागपुरवाला आदि कलाकारों के नाम प्रमुखता से लिये जाते हैं।

निसारदी : रागमाला चित्र सर्जक

मेवाड़ में महाराणा प्रताप के काल में निसारदी नाम के चित्रकार ने चावंड़ में रहकर जिन चित्रों की श्रृंखला रची, वह रागमाला नाम से प्रसिद्ध है। निसारूद्दीन ने चित्रों पर निसारदी नाम से हस्ताक्षर किये हैं। उसने अपना सृजन 1596 से 1605 तक रखा। महाराणा प्रताप और अमर सिंह के शासनकाल में पूरा किया।

साहबदीन

मेवाड़ में ही दूसरी रागमाला की चित्र श्रृंखलायें बनी। रागमाला नाम से कृतियों का सृजन अकबर के दरबार में हुआ। इस चर्चित श्रृंखला में 42 चित्र हैं, जिनमें 6 राग तथा 36 रागिनियाँ हैं। पुंडरीक तथा तानसेन ने 'रागमाला' नाम से पुस्तक लिखी।

नागपुरवाला

महाराजा जियाजी राव सिंधिया ने नागपुरवाला नामक कलाकार के निर्देशन में इन चित्रों का अंकन करवाया था। ग्वालियर रागमाला भित्ति चित्रों में खनिज तथा प्राकृतिक वनस्पतिक रंगों का प्रयोग किया गया है। शहर के तालकटोरा रोड़ स्थिति छत्री प्रांगण में रागिनियों का चित्रण मिलता है।[7]

इस प्रकार अनेक कलाकारों ने रागमाला के चित्रों के सृजन में सहयोग प्रदान किया। कलाकारों ने संगीत की महत्ता को संसार के सामने लाये।

उद्देश्य

इस शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य संगीत और चित्रकला का अंतर्संबंध दर्शाना है। संगीत जादू तो है पर क्षणिक है। चित्रकारों ने इसे रुप के माध्यम से अधिक लुभावना और स्थायी बना दिया है।

निष्कर्ष

चित्रकला और संगीत ललित कला की दो धारायें हैं। संगीत में श्रोता ही मंत्र मुग्ध होता है जो तत्क्षण ही होता है। चित्रकला में रेखा आकार रंगों के माध्यम से चित्रों का सृजन किया जाता है। यह हमारे मन मस्तिष्क पर स्थायी प्रभाव छोड़ता है। संगीत में स्वरों के विकास के दौरान रागमाला का प्रादुर्भाव हुआ। जिसे भारत के विभिन्न क्षेत्रों में चित्रित किया। इस प्रकार चित्रकला ने संगीत की विरासत को और प्रभावशाली बनाकर स्थायित्व प्रदान किया। आज विश्व के मानचित्र पर रागमाला के चित्रों ने अपना स्थान बनाया हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *ध्वनि और संगीत – ललित किशोर पृष्ठ–142*
2. *संगीत दर्पण – 1/14*
3. *https://hi.m.wikipidea.org/w.*
4. *भारतीय चित्रकला में संगीत तत्व – डॉ. रामकुमार वर्मा पृष्ठ–24*
5. *https://hindipratilip.com/read?id-64784217365544*
6. *भारतीय चित्रकला में संगीत तत्व – डॉ. राजकुमार वर्मा पृष्ठ–30*
7. *skjugnu.blogspot.com?blogpart*

Photo Gallery